कृत्यका *f.* (a praec. s. क vel अक in *fem.*) vexatrix. N. 13.29.

कृत्यवत् (a कृत्य s. वत्) officiosus, officii colendi studiosus. Dr. 7.6.

कृत्रिम (r. कृ s. त्रिम) artificiosus. Ragh. 13.75. 19.37. (v. कृ et कृति).

कृत्स्न (ut videtur, a r. कृ) totus, omnis, universus. Br. 1.17. N. 24.23. Bh. 3.29.

1. **कृप्** 1. *A.*: कल्पे pro कर्पे (fortasse a कृ i. e. कर्, adjecto प्, sicut saepe in formis caus. v. gr. 521. et cf. rad. क्लृप्, quod idem est ac कृप्, quum utrumque transeat in कल्प्) misereri. (Cf. gr. ἔλπω.)

2. **कृप्** 10. *P.*: कल्पयामि, *v. praec.* (दौर्बल्ये) debilem esse.

कृपण (r. कृप् s. अन v. *euph.* r. 94a).) miserandus, miser. Br. 3.12. N. 12.34. Bh. 2.49.

कृपा *f.* (r. कृप् s. आ) miseratio, misericordia. Br. 1.5.

कृमि *m.* (fortasse a r. कृष्) insectum, vermis. Ragh. 16.20.: तिरस्क्रियन्ते कृमितन्तुजालैः ... गवाक्षाः (Schol. Calc. कृमि explicat per ऊर्णनाभ); Bhar. 1.63.: कृमिकुलशतावृततनुः ... श्वा. (कृमि correptum est e कर्मि, v. क्रम्. Lith. *kirminis, kirmĕlĕ,* russ. червь *c̓ervj,* mutato *m* in *v*; hib. *cruimh,* cambo-bret. *pryv*; goth. *vaurms,* Th. *vaurmi,* e *hvaurmi,* v. gr. comp. 388.; lat. *vermi-s* e *quermi-s;* fortasse gr. ἕλμινς e ἕρμινς, cf. lith. *kirminis.*)

कृमिल (a praec. s. ल) verminosus.

कृश् 4. *P.* attenuare, शोककर्शित moerore attenuatus, emaceratus. N. 12.28. 16.33. 20.31. (Fortasse lat. *parco, parcus, parum, parvus, paucus,* gr. παῦρος, goth. *favai* pauci, angl. *few,* huc pertinent, mutatâ gutturali in labialem, v. sq.)

कृश (r. कृश् s. अ) macer, tenuis. N. 16.9. (Hib. *creas* «narrow, straight», *caile* «narrow ness, small» = कार्श्य q. v., mutato *r* in *l*; lat. *parcus, parvus;* v. r. कृश्.)

कृशानु *m.* ignis. Ragh. 2.49. 7.21.

1. **कृष्** 1. *P.* 1) trahere, abstrahere, rapere, abripere. Dr. 5.25.: सा कृष्यमाणा रथम् आरुरोह; H. 4.23.: लताश्च चकृषतुस् ततः; 4.11.: कृष्यमाणाम् मया ऽसकृत् ... सिंहेने ऽव महाद्विपम्; 7.14.: दुःखेन कर्षिता. 2) evellere. N. 9.11.: फलमूलानि कर्षयन्. - *Caus.* कर्षयामि vexare. Man. 7.111.: राजा स्वराष्ट्रं यः कर्षयत्य् अनवेक्षया; N. 16.32.: शोककर्षिता. (Lith. *karszù* pectino linum, lanam, et mutatâ gutturali in labialem et *r* in *l*: *plĕszu* 1) rumpo, 2) aro; *plĕszau* ultro citroque traho; russ. чешу *c̓es̓ŭ* pectino, ejecto *r*; latinum *verro,* ut mihi videtur, e *querro* abjecto *q*, sicut e. c. *vermis* e *quermis* - v. कृमि - et assimilato *s* antecedenti litterae; gr. κόρος scopae, v. Pott. p. 229.; etiam *vello,* quod cum sg. 2. convenit, huc traxerim; fortasse gr. ἕλκω, ita ut κ respondeat sanscrito ष्, quod cum क्ष cognatum est, gr. 99.)

c. अप abstrahere, abripere, detrahere, tollere, exuere. N. 9.33. 17.11.33.

c. अप praef. वि: व्यपकर्षामि. *id.* N. 24.41.

c. अव abstrahere, abripere, retrahere. N. 10.28.: अवकृष्टस् तु कलिना मोहितः प्राद्रवन् नलः; 10.26.: स कृष्यमाणः कलिना सौहृदेना ऽवकृष्यते.

c. आ attrahere, detrahere, deducere, protrahere. N. 10.26.

c. आ praef. अप: अपाकर्षामि abstrahere, amovere. Ragh. 12.17.: तम् अशक्यम् अपाक्रष्टुम्.

c. उत् sursum trahere, levare, elevare. Ragh. 6.14.: विस्रस्तम् अंसात् ... प्रालम्बम् उत्कृष्य.

c. नि praef. सम्, *v.* सन्निकर्ष, सन्निकृष्ट.

c. निस् extrahere, educere. Sa. 5.16.

c. परि trahere circum. Dr. 5.21.

c. प्र protrahere, extendere. प्रकृष्ट protractus, longus. N. 12.111.: गत्वा प्रकृष्टम् अध्वानम्. - c. प्र praef. वि removere. Ragh. 17.45.: वाच्याः शत्रवो विप्रकृष्टाः.

c. वि 1) abstrahere, abripere. Dr. 5.22. H. 4.21.22. 2) विक्रष्टुन् धनुः, चापम् intendere arcum. Sa. 3.22.: विकृष्य बलवद् धनुः; Ram. I. 62.4.38.: विकर्ष चापं सन्धाय वाणेना ऽनेन.

c. सम् abstrahere, abripere. Sa. 5.64.